पाठ 3

आप का पिता आप से बोल रहा है

इस अध्याय में आप अध्ययन करेंगे।

परमेश्वर आप से बात करना चाहता है
परमेश्वर बहुत विधियों में बोलता है
परमेश्वर की पुस्तक कैसे लिखी गयी
बाईबल संदर्भ
परमेश्वर के स्वर को कैसे सुनें

परमेश्वर आप से बात करना चाहता है

कौन सा पिता अपने बच्चों के साथ बात करने का आनन्द नही लेता यहां तक कि जब वे छोटे-छोटे बच्चे ही होते हैं और केवल मुस्कुराहट से ही उत्तर देते हैं?

आप का स्वर्गीय पिता भी अपने बच्चों के साथ बात करना पसन्द करता है, उन को अपना प्रेम दिखाते हुए उन को सिखलाते हुए और उन की समस्याओं में उन की सहायता करते हुए। क्या आप इस स्वर को सुनना चाहेंगे?

आप का काम

1. परमेश्वर

.....अ) अपने बच्चों के साथ बात करना पसन्द करता है।

.....ब) वह तो बहुत ही पवित्र है कि हम से बात करे।

.....स) अब वह लोगों के साथ बात नहीं करता

उत्तर : 1. अ) अपने बच्चों के साथ बात करना पसन्द करता है

परमेश्वर बहुत विधियों में बोलता है

पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप दादों से थोड़ा थोड़ा कर के और भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर के इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें की। **इब्रानियों 1:1,2**

यहां पर कुछ-एक ढंग है जिन के द्वारा परमेश्वर आप से बोलता है।

सीधे आप के हृदय के साथ

पवित्र आत्मा यीशु की उपस्थिति आप के लिये वास्तविक बनाता है। सम्भवतः वह आप के विवेक के द्वारा बोले, और आप को यह महसूस कराये कि आप को क्या करना चाहिये अथवा किसी काम को न करने की चातावनी दें। हो सकता है वह कोई अध्यात्मिक सच्चाई आप पर और स्पष्ट रूप से प्रकट करें। या आप एक गहरा दबाव महसूस करे कि परमेश्वर चाहता है आप करें। जब आप प्रार्थना करें तो परमेश्वर से कहें कि वह आप से बोले और यह आशा रखें कि परमेश्वर आप के हृदय से बात करेगा।

आप का काम

2. परमेश्वर सीधे आप के हृदय के साथ कैसे बात करता है?

(दो उत्तर चुनिये)

.....अ) आप सदैव एक भिन्न स्वर को सुनते हैं जैसे किसी अन्य व्यक्ति का।

.....ब) सम्भवतः आप कुछ करने को एक गहरा दबाव महसूस करें।

.....स) यह अवश्य है कि ऐसा स्वप्न अथवा दर्शन के माध्यम से हो।

.....द) एक आध्यात्मिक सच्चाई अचानक से आप के ऊपर साफ और स्पष्ट हो जाए।

उत्तर : 2. ब) सम्भवतः आप कुछ करने को एक गहरा दबाव महसूस करें। द) एक आध्यात्मिक सच्चाई अचानक से आप के ऊपर साफ और स्पष्ट हो जाए।

उस की आशीषों के द्वारा

अधिकतर मसीही कहते हैं कि जब से उन का नया जन्म हो चुका है सारा संसार ही उन को भिन्न रूप से देखता है। आप भी जब अपने आस पास देखें तो परमेश्वर की आशीषों का नये रूप से मूल्यांकन करेंगे। आप उस की उपस्थिति का आभास अद्‌भुत प्रकृति में कर सकते हैं। वह आप से संगति और कला के द्वारा बात करता है। दूसरे मसीहियों की मीठी संगीत में आप परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस करते हैं। आप के चारों ओर हजारों आशीषें परमेश्वर की भलाई का ज्ञान आप को देती है। वह आप की प्रार्थना के उत्तर में आप से बोलता है। विश्वास रूपी आंख परमेश्वर की मुस्कुराहट को देखती हैं और आपकी आत्मा के कान परमेश्वर को यह कहते हुए सुनते हैं, "मेरे बच्चे मैं तुझ से प्रेम करता हूं।"

आप का काम

3. क्या परमेश्वर ने कभी आप से बात की ?.....
   कब ? .....
4. उन आशीषों को लिखिए जिन से आप समझते हैं कि परमेश्वर आप से प्रेम करता है।

   .....

   .....

   .....

दूसरे मसीहियों के द्वारा

कभी-कभी परिवार में बड़े बच्चे छोटे बच्चों से कहते हैं : "नहीं, नहीं ! पापा वह पसन्द नहीं करते!" या " देखो, यह डैडी चाहते हैं।"

परमेश्वर भी, अपने बच्चों से प्रभु में बड़े भाईयों और बहिनों के द्वारा बोलता है। वह चाहता है कि हम अक्सर दूसरे मसीहियों से मिलें ताकि वह उन्हें हमारे प्रति प्रोत्साहन, मार्ग दर्शन और सहायता के लिये प्रयोग कर सके।

> मसीह के भय से एक दूसरे के आधीन रहो।
> **इफिसियों 5:21**

आप का काम

5. क्या कभी भी आप की अन्य मसीहियों ने यह समझने में कि परमेश्वर क्या चाहता है कि आप की सहायता की है ?
6. क्या कभी किसी ने आप को एक बेहतर मसीही बनने के लिये प्रोत्साहित किया है ? ..... कौन ?.....
7. परमेश्वर का धन्यवाद हो उस सावधान के लिये वह अपने बच्चों के द्वारा बोलता है। दूसरों को उद्धार प्राप्ति में सहायता अथवा प्रभु के पीछे हो लेने में प्रोत्साहित करने के निमित्त प्रभु से कहिये कि आप से बोले।

आध्यात्मिक वरदानों और सेविकाइयों के द्वारा

पवित्र आत्मा ने कलीसिया में बहुत से भिन्न वरदानों को रख दिया है। वह उन के द्वारा हमसे बोलता है। वह पास्तरों, शिक्षकों, प्रचारकों और लेखकों के द्वारा परमेश्वर का सन्देश कलीसिया को देता है।

वह दूसरों को परमेश्वर के विषय में बताने के लिए प्रत्येक मसीही को इस्तेमाल करना चाहता है। यह आप के लिए महत्वपूर्ण है कि जितना अधिक हो सके आप कलीसिया की सभाओं में जायें। जितनी बार भी आप जायें ध्यान से सुनें कि आप का स्वर्गीय पिता आप से क्या कहना चाहता है।

> क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं। **मत्ती 18:20**

आप का काम

8. (दो उत्तरों को चुनिये) परमेश्वर कभी-कभी के द्वारा लोगों से बोलता है।

.....अ) पास्तरों या प्रचारकों के प्रचार।
.....ब) दुष्ट आत्माओं के मध्यस्थीकरण।
.....स) जादू टोना।
.....द) मसीही लेखकों के द्वारा परचे और पुस्तकें।

9. जब आप कलीसिया में होते हैं तो क्या आप यह

सम्भावना रखते हैं कि परमेश्वर आप से बोलेगा?.....

10. क्या परमेश्वर आप से इस पुस्तक के द्वारा बोला है ?..

11. परमेश्वर से कहिए कि वह प्रत्येक पाठ में आप से बोले।

उत्तर : 8. अ) पास्तरों या प्रचारकों के प्रचार। द) मसीही लेखकों के द्वारा परचे और पुस्तकें।

गीतों के द्वारा

परमेश्वर अक्सर आप से किसी सुसमाचार गीत के शब्दों के द्वारा या किसी कोर्स के द्वारा बात करेगा। आप यह देखकर हैरान होंगे कि वह कितनी बार आप के मन में उन गीतों के शब्दों को लाएगा जब आप को उनके सन्देश की अवश्यकता होगी।

> आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।
> **इफिसियों 5:19**

आप का काम

12. प्रभु से उन गीतों को शीघ्र ही सीख लेने की सहायता मांगिये जो कि मंडली में गाए जाते हैं।

उन्हें जितना हो सके उतना ही घर पर गायें।

13. जो कुछ भी आप गा रहे हों उसके बारे में सोचने की आदत डालिये। जो कुछ भी आप गाते हैं उसे अर्थपूर्ण रूप से गाइये। प्रभु से उन गीतों के शब्दों को जो आप गाते हों अपने जीवन में लागू करने की सहायता मांगिये।

बाईबल के द्वारा

परमेश्वर आप के साथ उसकी पुस्तक पवित्र बाईबल के द्वारा बात करता है। उसके सन्देश को जानने का यह एक निश्चत साधन है। पास्तर हर समय आप के लिये परमेश्वर की इच्छा नहीं जानता होगा। मसीह में आप के भाई और बहनें हो सकता है कि आप को गलत सलाह दें। स्वप्न और दर्शन भी हर समय परमेश्वर की ओर से नहीं होते। जो कुछ भी आप सोचते रहे हों अथवा अचेतन मन से यह स्वप्न और दर्शन आ सकते हैं। आप ऐसा महसूस कर सकते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि आप कुछ करें जब कि ऐसा महसूस करना आप की इच्छा के द्वारा हो सकता है। इसलिये आप परमेश्वर के स्वर को कैसे पहचान सकते हैं?

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि परमेश्वर का सन्देश लिखित रूप में आप के पास बाईबल में पाया जाता है। परमेश्वर जो कुछ बाईबल में कहता है आप उस के द्वारा दूसरी बातों को जांचें। यही कारण है कि परमेश्वर के वचन के अध्ययन का एक महत्व है। इन बुनियादी अध्ययनों के द्वारा आप परमेश्वर के वचन को बेहतर रीति से समझ

पायेंगे। आप इसकी शिक्षाओं को अपने अभ्यासिक जीवन में लागू करना सीख जायेंगे।

> मेरी आंखें खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूं। हे यहोवा तेरा वचन आकाश में सदा स्थिर रहता है। तेरा वचन मेरे पांव के लिए दीपक, और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है। तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है। उससे भोले लोग समझ पाते हैं। तेरा सारा वचन सत्य ही है; और तेरा एक एक धर्ममय नियम सदा काल तक अटल है। **भजन संहिता 119:18, 89, 105, 130, 160**

आप का काम

14. परमेश्वर का आपके लिये क्या सन्देश है इस को निश्चित रूप से जानने के लिए तरीका है।

.....अ) परमेश्वर के वचन को अध्ययन करते हुए जो कि बाईबल है कि परमेश्वर क्या कहता है।

.....ब) अपने मित्र की सलाह को लेते हुए।

.....स) आप को क्या करना चाहिए इस से सम्बन्धित आप की क्या भावनायें पाई जाती हैं।

उत्तर : 14 अ) परमेश्वर के वचन को अध्ययन करते हुए जो कि बाईबल है कि परमेश्वर क्या कहता है।

परमेश्वर की पुस्तक कैसे लिखी गई

शताब्दियों से परमेश्वर ने कुछ भले मनुष्यों को अपने वचन को लिखने के लिये चुन लिया। पवित्र आत्मा ने उन्हें उभारा और बताया कि वे क्या लिखें। 1600 वर्षों की अवधि में परमेश्वर ने लगभग चालीस लोगों को 66 पुस्तकों के लिखने के लिये चुना जो कि पवित्र शास्त्र कहलाती है।

यह पुस्तकें पूर्ण रूप से सहमत हो कर एक ऐसी विचार धारा को विस्तृत करती है कि उसमें एक महत्वपूर्ण इकाई पाई जाती है इससे हमें मालूम होता है कि यह एक ही लेखक के द्वारा हुआ जो कि परमेश्वर है।

आप का काम

15. (दो चुनिये) मनुष्य जिन्होंने बाईबल लिखी

.....अ) भले मनुष्य थे।

.....ब) राजा के द्वारा उन्हें इन पुस्तकों को लिखने के लिये पैसा दिया गया था।

.....स) पवित्र आत्मा से उभारे गये थे।

.....द) बहुत सी गल्तियां कीं।

उत्तर : 15. अ) भले मनुष्य थे। स) पवित्र आत्मा से उभारे गये थे।

बहुत वर्ष पूर्व परमेश्वर ने अपने बच्चों के द्वारा इन 66 पुस्तकों को एकत्र कर एक ही पुस्तक का रूप दिलाया जो कि बाईबल है। पवित्र बाईबल का अर्थ है परमेश्वर की पुस्तकें। पहली 39 पुस्तकें

प्रभु यीशु मसीह के जन्म से पूर्व लिखी गई थी। यह पुराना नियम कहलाती है। बाईबल का दूसरा भाग नया नियम कहलाता है। इसमें 27 पुस्तकें जो कि यीशु के आने और परमेश्वर और मनुष्य के बीच नई वाचा की शर्तें बतलाती है।

आप का काम

16. बाईबल दो मुख्य भागों की बनी हुई है वे भाग कहलाते हैं।

.....अ) पुराना नियम और अपोक्लिप्स।
.....ब) पुराना नियम और नया नियम।
.....स) व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता।

17. बाईबल में कितनी पुस्तकें हैं?

.....अ) पुराने नियम में 39 और नया नियम में 27 पुस्तकें हैं।
.....ब) पुराने नियम में 29 और नया नियम में 37 पुस्तकें हैं।

उत्तर : 16. ब) पुराना नियम और नया नियम।
17. अ) पुराने नियम में 39 और नया नियम में 27 पुस्तकें हैं।

पुराना नियम पहले इब्रानी में तथा नया नियम युनानी में लिखा गया था। परमेश्वर ने अपनी पुस्तक सर्व मानव जाति के लिये हमें दी है और वह चाहता है कि प्रत्येक इसको पढ़े और उसने अपने

बच्चों को इसका बहुत भाषाओं में अनुवाद करने में सहायता की है।

अब बाईबल के भाग 1,300 से अधिक भाषाओं में मिलते हैं।

आप का काम

18. आरम्भ में बाईबल इस भाषा में लिखी गई थी।

.....अ) इब्रानी और लतीनी।
.....ब) स्पैनिश और युनानी।
.....स) फ्रैंच और अंग्रेजी।
.....द) इब्रानी और युनानी।

19. बाईबल है

.....अ) एक पुस्तक जो प्रत्येक के लिये हैं।
.....ब) केवल अच्छे पढ़े लिखों के लिये।
.....स) एक पुस्तक जो कि प्रभु के सेवकों को छोड़ और किसी के लिये नहीं।

उत्तर : 18. द) इब्रानी और युनानी। 19. अ) एक पुस्तक जो प्रत्येक के लिये हैं।

बाईबल के कुछ भाषाओं में कई भिन्न-भिन्न अनुवाद इत्यादि पाए जाते हैं। उन में से कुछ प्रोटैस्टैन्ट और अन्य कैथोलिक हैं परन्तु बुनियादी तौर पर वे सब एक ही बात कहते हैं।

पुराने नियम के पद इन पाठों में किंग जेम्स वर्शन से लिये गए हैं। नया-नियम के पद टूडेज इंगिलश वर्शन जो कि गुड न्यूज फार

माडर्न मैन कहलाता है से लिये गए हैं।

आप का काम

20. नया-नियम के पद इस पुस्तक में लिये गए हैं।

.....अ) किंग जेम्स वर्शन

.....ब) रिवाईस्ड स्टैन्डर्ड वर्शन

.....स) टूडेज इंग्लिश वर्शन

उत्तर : 20. स) टूडेज इंग्लिश वर्शन

बाईबल सन्दर्भ

बाईबल की प्रत्येक पुस्तक कुछ अध्यायों में विभाजित है। यह अध्याय छोटे-छोटे वाक्य खण्डों में विभाजित हैं जो पद कहलाते हैं। यह पद संख्या में हैं ताकि जो कुछ हम बाईबल में ढूंढ रहे हैं बता सकें कहां पर मिल सकता है। आप पहिले पुस्तक का नाम तब अध्याय की संख्या उसके बाद (:) विसर्ग चिन्ह और तब पद की संख्या लिखें। यूहन्ना 3:16 यूहन्ना की पुस्तक अध्याय 3, पद 16 की ओर संकेत करता है।

दो या अधिक पदों की ओर संकेत करने के लिये जो एक दूसरे के पश्चात न आती हों उन्हें कौमा के द्वारा अलग कर दें। यूहन्ना 3:16,17,20 अर्थ है यूहन्ना, अध्याय 3, पद 16,17, और 20। यह पवित्र शास्त्र का सन्दर्भ है।

दो पदों के बीच हाइफैन (-) का अर्थ है कि उसके बीच के

सभी पद सम्मिलित हैं। यूहन्ना 3:16-22 अर्थ है यूहन्ना, अध्याय 3, पद 16 से 22 तक।

जब दो से अधिक निरन्तर पद न हों, आप उन्हें कौमा के द्वारा अलग करें। यूहन्ना 3:16, 22, 23 का अर्थ है यूहन्ना अध्याय 3, पद 16, 22 और 23।

जब आप भिन्न-भिन्न अध्यायों में पदों को संकेत करें तो अर्ध विराम (;) के चिन्ह का प्रयोग करें पदों को विभाजित करते समय। यूहन्ना 3:16, 6:24 का अर्थ है यूहन्ना, अध्याय 3, पद 16; और यूहन्ना अध्याय 6, पद 24।

पवमेश्वर के स्वर को कैसे सुनें

रेडियो पर किसी स्टेशन को सुनने से पूर्व आप को सूई निर्धारित करनी है। आप अपनी आत्मा की सूई को परमेश्वर के स्वर को सुनने के लिये कैसे निर्धारित करें? यहां पर ऐसा करने के कुछ ढंग हैं।

- प्रतिदिन बाईबल पढें।
- जो कुछ भी आप ने बाईबल में पढ़ा है उसके बारे में सोचते रहें। वचन पर मनन करें।
- बार-बार पढ़ने और मुहं जबानी याद करने की आदत डालें उन पदों को जिनको आप विशेषकर पसन्द करते हैं।

> हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए। **2 तीमुथियुस 3:16, 17**

यदि आप अभी-अभी पहली बार बाईबल पढ़ने लगे हैं तो नया-नियम से पढ़ना आरम्भ करें। परमेश्वर आप से प्रभु यीशु के जीवन और उनकी शिक्षाओं के द्वारा बड़े स्पष्ट रूप से बातें करेगा। इससे पूर्व कि आप पुराना नियम पढ़ें, आप उस नई वाचा के विषय में और अधिक जान पायेंगे जिसको प्रभु यीशु मसीह ने हमारे साथ बान्धा है।

> पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भान्ति-भान्ति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके इन दिनों के अन्त में हमसे पुत्र के द्वारा बातें की। **इब्रानियों 1:1, 2**

- लगातार कलीसिया में जायें परमेश्वर के शब्द (स्वर) को सुनने की आशा करते हुए।

- हर रोज प्रार्थना करें। परमेश्वर से कहें कि वह आपसे बोले। जब आप प्रार्थना करें तो हो सकता है कि आप अपनी आखें बन्द करना चाहें कि आस पास की वस्तुओं से आप का मन हट जाये। पूरा समय परमेश्वर के साथ बातें करने में ही व्यतित न कर दें। शान्त हो उसके द्वारा आप के मन से बोलने की प्रतीक्षा करें।

- सुसमाचार भजन गायें और उसके शब्दों पर विचार करें। परमेश्वर की भलाई, शक्ति और उसका प्रेम आप के चारों ओर यह देखने का अभ्यास करें।

- मसीही साहित्य को पढ़िये तथा जब भी हो सके तो सुसमाचार के कार्यकर्मों को सुनें।

- दूसरे मसीहियों के साथ परमेश्वर और उसके वचन के बारे में बातचीत करें।

● जो कुछ परमेश्वर आप से करने को कहता है वह करें। स्मरण रखें कि यदि आप चाहते हैं कि वह आप का मार्ग दर्शन (अगुवाई) करे तो आप अवश्य है कि उसके पीछे चलने के लिये तैयार हों।

● विश्वासयोग्यता के साथ आप अपने पाठों को इस पुस्तक में तथा अन्य बाईबल अध्ययनों में करें, और परमेश्वर से कहें कि वह आप से इनके द्वारा बात करें।

आप का काम

21. परमेश्वर के स्वर को सुनने के लिये आप उन कामों को जो आप को करने हैं की सूची फिर से देख डालें। प्रत्येक के पीछे एक चिन्ह लगा दें जो काम आप कर रहे हों। जिनको आप अभी तक नहीं कर रहे उनमें से प्रत्येक के लिये प्रार्थना करें। उनमें से प्रत्येक को रेखांकित करें जिनको आप करने के लिये आरम्भ कर रहे हैं।